व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र भाग – ४ (फोल्डर नंबर ००१२३७)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय ---------- ७
सम्पादन सहयोगी सत्कार ---------- ८
पद्मश्री मोहनमलजी सा. चोरड़िया जीवन रेखा ---------- ९
प्रस्तावना ---------- १२
विषयानुक्रम ---------- १०६
बीसवाँ शतक
प्राथमिक ---------- ३
बीसवें शतक के उद्देशकों का नाम-निरूपण ---------- ५
प्रथम उद्देशक
विकलेन्द्रिय जीवों में स्यात्, लेश्यादि द्वारों का निरूपण ---------- ६
पंचेन्द्रिय जीवों में स्यात् लेश्यादि द्वारों का निरूपण ---------- ७
विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों का अल्वबहुत्व ---------- ९
द्वितीय उद्देशक
आकाशास्तिकाय के भेद, स्वरूप तथा पंचास्तिकायों का प्रमाण ---------- ११
अधोलोक आदि में धर्मास्तिकायादि की अवगाहना-प्ररूपणा ---------- १२
धर्मास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द ---------- १२
अधर्मास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द ---------- १३
आकाशास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द ---------- १४
जीवास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द ---------- १५
पुद्गलास्तिकाय के पर्यायवाची शब्द ---------- १६
तृतीय उद्देशक
आत्मा में प्राणातिपात से लेकर अनाकारोपयोग धर्म तक का परिणमन ---------- १७
गर्भ में उत्पन्न होते हुए जीव में वर्णादि प्ररूपणा ---------- १८
चतुर्थ उद्देशक
इन्द्रियोपचय के भेदादि की प्ररूपणा ---------- १९
पंचम उद्देशक
परमाणु पुद्गल में वर्ण-गंध-रसस्पर्श की प्ररूपणा ---------- २०
द्विप्रदेशी स्कन्ध में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की प्ररूपणा ---------- २०
त्रिकप्रदेशी स्कन्ध में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की प्ररूपणा ---------- २२
चतुष्प्रदेशी स्कन्ध में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की प्ररूपणा ---------- २५
पंचप्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि की प्ररूपणा ---------- २९
षट्प्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि के भंगों का निरूपण ---------- ३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तप्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि भंगों का निरूपण -- ३२
अष्टप्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि भंगों का निरूपण -- ३४
नवप्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि के भंगों का निरूपण--- ३६
दसप्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि के भंगों का निरूपण--- ३७
बादर परिणामी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध में वर्णादि प्ररूपणा --- ३८
छठा उद्देशक
सौधर्मादि कल्प से ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक की दो-दो पृथ्वियों के बीच...----------------------- ४६
सौधर्मादिकल्प से ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक के बीच में...-- ४७
पृथ्वीकायिक विषयक सूत्रों के अतिदेशपूर्वक अप्कायिक विषयक... ------------------------------ ४९
पृथ्वीकायिक-विषयक सूत्रों के अतिदेशपूर्वक अप्कायिक जीवविषयक... -------------------------- ५०
सत्तरहवें शतक के दसवें उद्देशक के अनुसार वायुकायिक जीवों...---------------------------------- ५१
सप्तम उद्देशक
बंध के तीन भेद और चौबीस दण्डकों में उनकी प्ररूपणा--- ५२
अष्टविध कर्मों में त्रिविध बन्ध एवं उनकी चौबीस दण्डकों में प्ररूपणा --------------------------- ५३
आठों कर्मों के उदयकाल में प्राप्त होने वाले बंधत्रय...--- ५३
वेदत्रय तथा दर्शनमोहनीय-चारित्रमोहनीय में त्रिविध बन्ध प्ररूपणा------------------------------- ५४
शरीर, संज्ञा, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, अज्ञान एवं ज्ञानाज्ञान...-- ५५
आठवाँ उद्देशक
कर्मभूमियों और अकर्मभूमियों की संख्या का निरूपण --- ५८
अकर्मभूमि और कर्मभूमि के विविध क्षेत्रों में उत्सर्पिणी और... ----------------------------------- ५९
अरहंतों द्वारा महाविदेह और भरत-ऐरवत क्षेत्र में कौन-कौन से धर्म...--------------------------- ६०
भरतक्षेत्र में वर्तमान अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकरों के नाम ------------------------------ ६०
चौबीस तीर्थंकरों के अंतर तता तेईस जिनान्तरों में कालिकश्रुत... ------------------------------- ६१
भगवान महावीर और शेष तीर्थंकरों के समय में पूर्वश्रुति...--------------------------------------- ६२
भगवान् महावीर और भावी तीर्थंकरों में अन्तिम तीर्थंकर के तीर्थ... ---------------------------- ६२
तीर्थ और प्रवचन क्या और कौन --- ६४
निर्ग्रन्थ-धर्म में प्रविष्ट उग्रादि क्षत्रियों द्वारा रत्नत्रय साधना से सिद्धगति...----------------------- ६४
नौवाँ उद्देशक
चारणमुनि के दो प्रकार-विद्याचारण और जंघाचारण--- ६६
विद्याचारण लब्धि समुत्पन्न होने से विद्याचारण कहलाता है------------------------------------- ६६
विद्याचारण की शीघ्र, तिर्यग् एवं ऊर्ध्वगति-सामर्थ्य तथा विषय---------------------------------- ६७
जंघाचारण का स्वरूप--- ६९
जंघाचारण की शीघ्र, तिर्यक् और ऊर्ध्वगति का सामर्थ्य और विषय ----------------------------- ७०
दसवाँ उद्देशक
चौबीस दण्डकों में सोपक्रम एवं निरुपक्रम आयुष्य की प्ररूपणा ---------------------------------- ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौबीस दण्डकों में उत्पत्ति और उद्वर्त्तना की आत्मोपक्रम-परोपक्रम... ---------------------------- ७३
चौबीस दण्डकों और सिद्धों में कति-अकति-अवक्तव्य-संचित पदों का...-------------------------- ७५
कति-अकति-अवक्तव्य-संचित यथायोग्य दण्डकों और सिद्धों...------------------------------------ ७८
चौबीस दण्डकों और सिद्धों में षटक्-समर्जित आदि पाँच विकल्पों... ---------------------------- ७९
षटक्-समर्जित आदि से विशिष्ट चौबीस दण्डकों और सिद्धों...------------------------------------ ८१
चौबीस दण्डकों और सिद्धों में द्वादश, नोद्वादश आदि पदों का यथायोग्य निरूपण-------------- ८२
द्वादश, नोद्वादश आदि से समर्जित चौबीस दण्डकों तथा सिद्धों का अल्पबहुत्व ----------------- ८४
चौबीस दण्डकों और सिद्धों में चतुरर्दशीति-समर्जित आदि पदों का यथायोग्य... --------------- ८५
चतुर्दशीति-नोचतुर्दशीति इत्यादि से समर्जित चौबीस दण्डकों और सिद्धों...--------------------- ८७
इक्कीसवं-बाईसवें-तेईसवाँ शतक
प्राथमिक --
इक्कीसवाँ शतक
इक्कीसवें शतक के आठ वर्गों के नाम तथा अस्सी उद्देशकों का निरूपण---------------------- ९१
प्रथम वर्ग-प्रथम उद्देशक
मुलरूप में उत्पन्न होने वाले शालि आदि जीवों के उत्पाद... ------------------------------- ९२
प्रथम शालिवर्ग – शेष नौ उद्देशक
द्वितीय कलवर्ग-दश उद्देशक
प्रथम शालिवर्गानुसार द्वितीय कलवर्ग का निरूपण -------------------------------------- ९९
तृतीय अतसी वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम शालिवर्गानुसार तृतीय अतसी वर्ग का निरूपण---------------------------------------१००
चतुर्थ वंश वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम शालिवर्ग के अनुसार चतुर्ध वंशवर्ग का निरूपण --------------------------------------१०१
पंचम इक्षु वर्ग-दस उद्देशक
चतुर्थ वंशवर्गानुसार पंचम इक्षुवर्ग का निरूपण---१०२
छठा दर्भ वर्ग-दस उद्देशक
चतुर्थ वंशवर्गानुसार छठे दर्भ वर्ग का निरूपण ---१०३
सप्तम अभ्र वर्ग-दस उद्देशक
चतुर्थ वंशवर्गानुसार सप्तम अभ्रवर्ग का निरूपण --१०४
अष्टम तुलसी वर्ग-दस उद्देशक
चतुर्थ वंशवर्गानुसार अष्टम तुलसीवर्ग का निरूपण---१०५
बाईसवाँ शतक
बाईसवें शतक के छह वर्गों के नाम, उसके आठ उद्देशकों का निरूपण ------------------------------१०६
प्रथम तालवर्ग-दस उद्देशक---१०८
द्वितीय एकास्थिक वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम तालवर्गानुसार द्वितीय एकास्थिकवर्ग का निरूपण---१०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय बहुबीजक वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम तालवर्गानुसार तृतीय बहुबीजकवर्ग का निरूपण ---------- ११०
चतुर्थ गुच्छ वर्ग-दस उद्देशक
इक्कीसवें शतक के चतुर्थ वर्गानुसार गुच्छवर्ग का निरूपण ---------- १११
पंचम गुल्म वर्ग-दस उद्देशक
इक्कीसवें शतक के प्रथम वर्गानुसार पंचम गुल्मवर्ग का निरूपण ---------- ११२
छठा वल्ली वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम तालवर्गानुसार छठे वल्लीवर्ग का निरूपण ---------- ११३
तेईसवाँ शतक
तेईसवें शतक का मंगलाचरण ---------- ११५
तेईसवें शतक के पांच वर्गों के नाम तथा उसके पचास उद्देशकों का निरूपण ---------- ११५
प्रथम आलुक वर्ग-दस उद्देशक
इक्कीसवें शतक के चतुर्थ वर्गानुसार प्रथम आलुकवर्ग का निरूपण ---------- ११६
द्वितीय लोही वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम वर्गानुसार द्वितीय लोहीवर्ग का निरूपण ---------- ११७
तृतीय अवक वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम वर्गानुसार तृतीय अवकवर्ग का निरूपण ---------- ११८
चतुर्थ पाठा वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम वर्गानुसार चतुर्थ पाठावर्ग का निरूपण ---------- ११९
पंचम माषपर्णी वर्ग-दस उद्देशक
प्रथम वर्गानुसार माषपर्णी नामक पंचम वर्ग का निरूपण ---------- १२०
चौवीसवाँ शतक
प्राथमिक ---------- १२२
चौवीसवें शतक के चौबीस दण्डकीय चौबीस उद्देशकों में उपपात... ---------- १२४
प्रथम उद्देशक
गति की अपेक्षा से नैरयिकादि-उपपात-निरूपण ---------- १२५
प्रथम नरक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी-पंचेन्द्रिय... ---------- १२७
नरक में उत्पन्न होने वाले संख्यात वर्षायुष्क... ---------- १३९
शर्कराप्रभा से तमःप्रभा नरक तक में उत्पन्न होने वाले... ---------- १४८
सप्तम नरक पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय... ---------- १५०
पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों की समुच्चय रूप से... ---------- १५३
रत्नप्रभा नरक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येय वर्षायुष्क... ---------- १५५
शर्कराप्रभा नरक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क... ---------- १५८
वालुका-पंक-धूम-तमःप्रभा नरक में उत्पन्न होने वाले... ---------- १६१
सप्तम नरक में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क... ---------- १६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय उद्देशक
गती की अपेक्षा से असुरकुमारों के उपपात की प्ररूपणा--१६४
असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी-पंचेन्द्रिय...--------------------------------------१६४
संख्येय वर्षायुष्क-असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय...---१६५
असुरकुमार में उत्पन्न होने वाले असंख्येय वर्षायुष्क संज्ञी...------------------------------------१६६
असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी...---------------------------------------१७०
संख्येयवर्षायुष्क, असंख्येयवर्षायुष्क संज्ञी मनुष्यों की... ---१७१
असुरकुमारों में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंख्येयवर्षायुष्क... -----------------------------------१७३
तृतीय उद्देशक
गति की अपेक्षा से नागकुमारों की उत्पत्ति का निरूपण ---१७५
नागकुमार में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय... --------------------------------------१७५
नागकुमारों में उत्पन्न होने वाले असंख्येयवर्षायुष्क...---१७६
नागकुमार में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क... ---------------------------------------१७८
नागकुमार में उत्पन्न होने वाले असंख्यातवर्षायुष्क संज्ञी... -------------------------------------१७९
नागकुमार में उत्पन्न होने वाले पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्क संज्ञी...---------------------------------१८०
चतुर्थ से ग्यारह उद्देशक
सुवर्णकुमार से स्तनितकुमार तक चौथे से लेकर ग्यारहवें उद्देशक...----------------------------१८१
बारहवाँ उद्देशक
गति की अपेक्षा से पृथ्विकायिकों की उत्पत्ति प्ररूपणा--१८२
पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले पृथ्वीकायिक सम्बन्धी...---१८३
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले अप्कायिकों में उपपात...--------------------------------------१८७
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले तेजस्कायिकों में उपपात...-----------------------------------१८९
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले वनस्पतिकायिकों में...--१९०
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले द्वीन्द्रिय जीवों में... ---१९१
पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले त्रीन्द्रिय में उपपात...---१९४
पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले चतुरिन्द्रिय जीवों के... ---------------------------------------१९५
पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक की अपेक्षा पृथ्वीकायिक-उत्पत्ति निरूपण ------------------------------१९६
पृथ्वीकायिक में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय... ---१९७
पृथ्वीकाय में उत्पन्न होने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय...---१९८
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी-संज्ञी-संख्येय...---------------------------------------१९९
देवों से आकर पृथ्वीकायिकों में उत्पाद का निरूपण--२०२
भवनवासी देवों की अपेक्षा पृथ्वीकायिकों में उत्पत्ति-निरूपण--------------------------------------२०२
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले असुरकुमार...---२०३
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले नागकुमार से लेकर... ---------------------------------------२०५
पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले वाणव्यन्तर देवों में उत्पाद...-------------------------------२०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृथ्वीकायिकों में उत्पन्न होने वाले ज्योतिष्क देवों में उपपात... ---------------------------------२०७
वैमानिक देवों की अपेक्षा पृथ्वीकायिक उत्पत्ति-निरूपण---२०८
तेरहवाँ उद्देशक
तेरहवें उद्देशक के प्रारम्भ में मध्य मंगलाचरण---२११
अप्कायिकों में उत्पन्न होने वाले चौबीस दण्डकों में उत्पादादि प्ररूपणा ------------------------२११
चौदहवाँ उद्देशक
तेजस्कियाकों में उत्पन्न होने वाले दण्डकों में बारहवें उद्देशक के अनुसार. --------------------२१३
पन्द्रहवाँ उद्देशक
वायुकायिक में उत्पन्न होने वाले दण्डकों में चौदहवें उद्देशक के अनुसार ----------------------२१४
सोलहवाँ उद्देशक
वनस्पतिकायिकों में उत्पन्न होने वाले चौबीस दण्डकों के बारहवें... -----------------------------२१५
सत्तरहवाँ उद्देशक
द्वीन्द्रियों में उत्पन्न होने वाले दण्डकों में उपपात-परिमाणादि बीस...---------------------------२१७
अठारहवाँ उद्देशक
त्रीन्द्रियों में उत्पन्न होने वाले दण्डकों में सत्रहवें उद्देशकानुसार...-------------------------------२१९
उन्नीसवाँ उद्देशक
चतुरिन्द्रियों में उत्पन्न होने वाले दण्डकों में उपपात... --२२१
बीसवाँ उद्देशक
नरक पृथ्वियों की अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पत्ति-निरूपण----------------------------------२२२
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले सात नरकों के नैरयिकों के... --------------------------२२२
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले एकेन्द्रिय-विकलेन्द्रियों के... ----------------------------२२७
पंचेन्द्रिय-तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के..---------------------------२२८
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी-पंचेन्द्रिय... ---२३२
मनुष्य की अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच-योनिकों में उत्पत्ति निरूपण---------------------------------२३५
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले संज्ञी मनुष्य के उत्पाद...-------------------------------२३६
देवों से पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के उत्पत्ति का निरूपण--२३९
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले भवनवासी देवों... --२४०
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले वाणव्यन्तर देवों...---------------------------------------२४१
पंचेन्द्रिय-तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले ज्योतिष्क देवों... --२४१
वैमानिक देवों की पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पत्ति निरूपण --२४२
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होने वाले सौधर्म से सहस्रार... -------------------------------------२४३
इक्कीसवाँ उद्देशक
गति की अपेक्षा मनुष्यों के उपपात का निरूपण--२४५
मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले रत्नप्रभा से तमःप्रभा तक...---------------------------------------२४५
मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले अग्नि-वायुकाय के सिवाय... --------------------------------------२४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवों की अपेक्षा मनुष्यों की उत्पत्ति-प्ररूपणा---२४८
मनुष्यों में उत्पन्न होने वाले भवनवासी आदि चारों प्रकार के देव------------------------------२४९
बाईसवाँ उद्देशक
वाणव्यन्तरों में उत्पन्न होने वाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय...--२५५
वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उत्पाद...-------------------------------------२५५
वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों के उत्पाद...--------------------------------------२५७
तैईसवाँ उद्देशक
गती की अपेक्षा ज्योतिष्क देवों के उपपात का निरूपण--२५८
ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले असंख्येयवर्षायुष्क...---------------------------------------२५९
ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले संख्यातवर्षायुष्क...--२६१
ज्योतिष्क देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों में उपपात...--२६२
चौबीसवाँ उद्देशक
गति को लेकर सौधर्म-देव के उपपात का निरूपण---२६४
सौधर्म-देव में उत्पन्न होने वाले असंख्येय-संख्येय-वर्षायुष्क..------------------------------------२६७
ईशान से सहस्रार देव तक में उत्पन्न होने वाले तिर्यंचो...--२६८
आनत से सर्वार्थसिद्ध तक के देवों में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों...------------------------------२७०
पच्चीसवाँ शतक
प्राथमिक---
पच्चीसवें शतक के उद्देशकों का नाम---२७८
प्रथम उद्देशक
लेश्याओं के भेद, अल्पबहुत्व आदि का अतिदेशपूर्वक निरूपण-----------------------------------२७९
संसारी जीवों के चौदह भेदों का निरूपण--२७९
जघन्य और उत्कृष्ट योग को लेकर संसारी जीवों का अल्पबहुत्व निरूपण---------------------२८०
प्रथम समयोत्पन्नक चतुर्विंशति दण्डकवर्ती दो जीवों का समयोगित्व...------------------------२८२
योग के पन्द्रह भेदों का निरूपण---२८४
पन्द्रह प्रकार के योगों में जघन्य-उत्कृष्ट योगों का अल्पबहुत्व-----------------------------------२८५
द्वितीय उद्देशक
द्रव्यों के भेद-प्रभेद तथा दोनों प्रकार के द्रव्यों की अनन्तता की प्ररूपणा----------------------२८७
जीव और चौवीस दण्डकवर्ती जीवों की अजीवद्रव्य परिभोगतानिरूपण-------------------------२८८
असंख्येय लोक में अनन्त द्रव्यों की स्थिति---२८९
लोक के एक प्रदेश में पुद्गलों के चय-छेद-उपचय-अपचय निरूपण-------------------------------२९०
शरीरादि के रूप में स्थित-अस्थित द्रव्य-ग्रहण प्ररूपणा--२९१
तृतीय उद्देशक
संस्थान के छह भेदों का निरूपण---२९५
छह संस्थानों की द्रव्यार्थ तथा प्रदेशार्थ रूप से अनन्तता प्ररूपणा ------------------------------२९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छह संस्थानों का द्रव्यार्थादि रूप से अल्पबहुत्व ---२९६
संस्थानों के पाँच भेद और उनकी अनन्तता का निरूपण --२९७
यवमध्यगत परिमण्डलादि संस्थानों की परस्पर अनन्तता की प्ररूपणा---------------------------२९९
सप्त नरकपृथ्वियों से लेकर ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी तक में पांचों यवमध्य... ------------------------३००
पांच संस्थानों में प्रदेशतः अवगाहना-निरूपण --३०२
पंच संस्थानों में एकत्व-बहुत्व दृष्टि से द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थता... --३०७
पांच संस्थानों में यथायोग्य कृतयुग्मादि प्रदेशावायह प्ररूपणा--३०९
परिमण्डलादि संस्थानों में कृत युग्मादि समय स्थिति की प्ररूपणा --------------------------------३१२
पांच संस्थानों में वर्ण-गंध-रस-स्पर्श की अपेक्षा कृतयुग्मादि प्ररूपणा -----------------------------३१२
श्रेणियों तथा लोक-अलोकाकाश श्रेणियों में प्रदेशार्थ से यथायोग्य...--------------------------------३१५
सामान्य श्रेणियों तथा लोक-अलोकाकाश श्रेणियों में यथायोग्य... ----------------------------------३१६
सामान्य श्रेणियों तथा लोक-अलोकाकाश श्रेणियों में द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थ... ---------------------------३१८
श्रेणी के प्रकारान्तर से सात भेद ---३२०
परमाणु-पुद्गल तथा द्विप्रदेशिकादि स्कन्धों की चौबीस दण्डकों में अनुश्रेणि...-------------------३२१
चौबीस दण्डकों की आवास-संख्या प्ररूपणा --३२२
द्वादशविध गणिपिटकों का अतिदेशपूर्वक निर्देश ---३२२
नैरयिकादि सेन्द्रियादि सकायिकादि, आयुष्य बन्धक-अबन्धकों के... ----------------------------३२२
चतुर्थ उद्देशक
चार युग्म और उनके अस्तित्व का कारण---३२६
चौवीस दण्डकों और सिद्धों में युग्मभेद निरूपण--३२६
षट्द्रव्य और उनमें द्रव्यार्थ तथा प्रदेशार्थ रूप से युग्मभेद निरूपण------------------------------३२८
धर्मास्तिकायादि षट्द्रव्यों में अल्प-बहुत्व का प्रज्ञापनासूत्रातिदेशपूर्वक... ------------------------३२९
धर्मास्तिकायादि में यथायोग्य अवगाढ-अनवगाढ प्ररूपणा ---३२९
जीव एवं चौवीस दण्डकों में एकत्व-बहुत्व की अपेक्षा द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थ रूप...-------------------३३१
सामान्य जीव एवं चौबीस दण्डकों में अवगाहनापेक्षया... --- ३३३
जीव एवं चौवीस दण्डकों में कृतयुग्मादि समयस्थिति की प्ररूपणा------------------------------३३४
सामान्य जीव एवं चौबीस दण्डकों में वर्णादि पर्यायापेक्षया... --३३६
जीव, चौबीस दण्डकों और सिद्धों में ज्ञान-अज्ञान-दर्शन... ---३३७
प्रज्ञापनासूत्र के अतिदेशपूर्वक शरीर सम्बन्धी विवरण ---३३९
जीव तथा चौवीस दण्डकों में सकम्प-निष्कम्प तथा देशकम्प-सर्वकम्प... -----------------------३४०
परमाणु पुद्गलों से अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक की प्ररूपणा---३४२
एक प्रदेशावगाढ से असंख्येय प्रदेशावगाढ पुद्गलों की प्ररूपणा-------------------------------------३४२
एक समय से लेकर असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गलों की अनन्तता-------------------३४२
वर्णगन्धादि वाले पुद्गलों की अनन्तता ---३४३
परमाणु-पुद्गल से अनन्त प्रदेशी स्कन्धों तक की द्रव्य-प्रदेशार्थ से यथायोग्य...---------------३४३
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक गुण काले आदि वर्ण तथा गन्ध-रस-स्पर्श वाले पुद्गलों की वक्तव्यता ---------------------३४६
एकादिगुण कर्कश स्पर्श वाले पुद्गलों की द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से विशेषाधिकतादि...---------------३४७
एक-संख्येय-असंख्येय-प्रदेशी पुद्गलों की अवगाहना एवं स्थिति को लेकर...---------------------३४८
एक-संख्येय-असंख्येय-अनन्तगुण-वर्ण-गन्धादि वाले पुद्गलों की द्रव्यार्थ...----------------------३५०
अवगाहना, स्थिति, वर्णगन्धादि पर्यायों की अपेक्षा कृतयुग्मादि प्ररूपणा -----------------------३५४
परमाणु से लेकर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक... --३५८
परमाणु से लेकर अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक सकम्पता निष्कम्पता-प्ररूपणा--------------------३६०
परमाणु से अनन्तप्रदेशई सकम्प-निष्कम्प स्कन्ध... --३६४
परमाणु से अनन्तप्रदेशी सकम्प-निष्कम्प स्कन्धों की द्रव्यार्थ...--------------------------------३६४
परमाणु से अनन्तप्रदेशी स्कन्ध तक देशकम्प-सर्वकम्प-निष्कम्पता...-------------------------३६६
परमाणु से अनन्तप्रदेशी देशकम्प-सर्वकम्प-निष्कम्प स्कन्दों की स्थिति... -------------------३६७
सर्व-देश-कम्पक-निष्कम्पक परमाणु से अनन्तप्रदेशी... ---------------------------------------३७१
सर्व-देश-निष्कम्प परमाणुओं से अनन्त प्रदेशी...--३७२
धर्मास्तिकायादि के मध्यप्रदेशों की संख्या का निरूपण---३७४
जीवास्तिकाय-मध्यप्रहदेश तथा आकाशास्तिकाय प्रदेशों की अवगाहना क..-------------------३७५
पंचम उद्देशक
पर्यव-भेद एवं उसके विशिष्ट पहलुओं के विषय में पर्यवपद...-------------------------------------३७६
आनप्राणादि कालों में एकत्व-बहुत्व की अपेक्षा से आवलिका...----------------------------------३७८
स्तोकादि कालों में एकत्व-बहुत्व दृष्टि से आनप्राणादि से शीर्षप्रहेलिका...-----------------------३८०
सागरोपमादि कालों में एकत्व-बहुत्व की अपेक्षा से पल्योपम-संख्या निरूपण-----------------३८१
उत्सर्पिणी आदि कालों में एकत्व-बहुत्व की अपेक्षा से सागरोपम-संख्या निरूपण ------------३८२
पुद्गल रिवर्तनादि कालों में एकत्व-बहुत्व दृष्टि से अवसर्पिणी...------------------------------------३८२
भूत-भविष्यत् तथा सर्वकाल में पुद्गल परिवर्तन की अनन्तता ----------------------------------३८३
अनागत काल की अतीतकाल से समयाधिकता---३८३
सर्वाद्धा का अतीत तता अनागत काल के समय से न्यूनाधिकता --------------------------------३८४
निगोद के भेद-प्रभेदों का निरूपण--३८५
औदयिकादि छह भावों का अतिदेशपूर्वक प्ररूपण --३८६
छठा उद्देशक
छठे उद्देशक की छत्तीस द्वार निरूपक गाथायें --३८७
प्रथम प्रज्ञापनाद्वार-निर्ग्रन्थों के भेद-प्रभेद ---३८७
द्वितीय क्षेत्रद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में स्त्रीवेदादि प्ररूपणा --३९१
तृतीय रागद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में सरागत्व वीतरागत्व प्ररूपणा---------------------------------३९३
चतुर्थ कल्पद्वार पंचविध निर्ग्रन्थों में स्थितिकल्पादि-जिनकल्पादि-प्ररूपणा ---------------------३९४
पंचम चारित्रद्वार-पंचविध निग्न्थों में चारित्र प्ररूपणा --३९६
छठा प्रतिसेवनाद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में मूल-उत्तरगुण...--३९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तम ज्ञानद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में ज्ञान और श्रुताध्ययन की प्ररूपणा ------------------------३९८
आठवाँ तीर्थद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में तीर्थ-अतीर्थ प्ररूपणा --४००
नौवाँ लिंगद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में स्वलिंग-अन्यलिंग-गृहीलिंग-प्ररूपणा ------------------------४०१
दसवाँ शरीरद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में शरीर-भेद-प्ररूपणा --४०२
ग्यारहवाँ क्षेत्रद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में कर्मभूमि-अकर्मभूमि-प्ररूपणा ------------------------------४०३
बारहवाँ कालद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों में अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीकालादि-प्ररूपणा --------------------४०४
तेरहवाँ गतिद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों की गति, पदवी तथा स्थिति की प्ररूपणा--------------------४०८
चौदहवाँ संयमद्वार-पंचविध निर्ग्रन्थों के संयमस्थान और उनका अल्पबहुत्व--------------------४११
पन्द्रहवाँ निकर्ष (सन्निकर्ष) द्वार... --४१२
पंचविध निर्ग्रन्थों के जघन्य-उत्कृष्ट चारित्र पर्यायों का अल्पबहुत्व ------------------------------४१६
सोलहवाँ योगद्वार...--४२०
सत्तरहवाँ उपयोगद्वार...---४२०
अठराहवाँ कषायद्वार... ---४२१
उन्नीसवाँ लेश्याद्वार...--४२२
बीसवाँ परिणामद्वार... --४२४
इक्कीसवाँ द्वार... ---४२७
बाईसवाँ द्वार...-- ४२८
तेईसवाँ कर्मोदीरणाद्वार... ---४२९
चौवीसवाँ उपसम्पद्-जहद्-द्वार... --४३१
पच्चीसवाँ संज्ञाद्वार... --४३२
छव्वीसवाँ द्वार...-- ४३३
सत्ताईसवाँ भवद्वार...---४३४
अट्ठाईसवाँ आकर्षद्वार... ---४३५
उनतीसवाँ कालद्वार... --४३७
तीसवाँ अन्तरद्वार---४३८
इकतीसवाँ समुद्घातद्वार... ---४४०
बत्तीसवाँ क्षेत्रद्वार... --४४१
तेतीसवाँ स्पर्शनाद्वार...--४४२
चौतीसवाँ भावद्वार...--४४२
पैंतीसवाँ परिमाणद्वार... --४४३
छतीसवाँ अल्पबहुत्वद्वार...--४४५
सप्तम उद्देशक
प्रथम प्रज्ञापनाद्वार... ---४४७
संयत-स्वरूप --- ४४८
द्वितीय वेदद्वार...-- ४५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय रागद्वार...-- ४५०
चतुर्थ कल्पद्वार...---४५१
पंचम चारित्रद्वार...--४५२
छठा प्रतिसेवनाद्वार... ---४५३
सप्तम ज्ञानद्वार... ---४५३
अष्टम तीर्थद्वार...-- ४५५
नौवाँ लिंगद्वार... -- ४५५
दसवाँ शरीरद्वार...---४५६
ग्यारहवाँ क्षेत्रद्वार...--४५६
बारहवाँ कालद्वार... --४५७
तेरहवाँ गतिद्वार... --४५८
चौदहवाँ संयतद्वार...--४६०
पन्द्रहवाँ निकर्ष (चारित्रपर्यव) द्वार... ---४६२
पंचविध संयतो में स्वस्थान-परस्थान चारित्रपर्यवों की अपेक्षा हीन... -------------------------४६२
सोलहवाँ योगद्वार...---४६५
सत्तरहवाँ उपयोगद्वार...--४६५
अठारहवाँ कषायद्वार... ---४६५
उन्नीसवाँ लेश्याद्वार...---४६६
बीसवाँ परणामद्वार...---४६७
इक्कीसवाँ बन्धद्वार...--४६९
बाईसवाँ वेदनद्वार... ---४७०
तेईसवाँ कर्मोदीरणद्वार...--४७०
चौवीसवाँ हान-उपसम्पद्द्वार...---४७१
पच्चीसवाँ संज्ञाद्वार... ---४७३
छव्वीसवाँ आहारद्वार...---४७४
सत्ताईसवाँ भवद्वार ---४७४
अट्ठाईसवाँ आकर्षद्वार... --४७५
उनतीसवाँ काल-(स्थिति)-द्वार...---४७७
तीसवाँ अन्तरद्वार...--४७९
इकतीसवाँ समुद्घातद्वार... ---४८१
बत्तीसवाँ क्षेत्रद्वार... --४८१
तेतीसवाँ स्पर्शनाद्वार...---४८२
चौतीसवाँ भावद्वार...---४८२
पैतीसवाँ परिमाणद्वार... ---४८२
छत्तीसवाँ अल्पबहुत्वद्वार...--४८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिसेवना-दोषालोचनादि छहद्वार ---------- ४८४
प्रथम प्रतिसेवनाद्वार... ---------- ४८५
द्वितीय आलोचनाद्वार... ---------- ४८५
तृतीय आलोचनाद्वार... ---------- ४८६
चतुर्थ समाचारीद्वार... ---------- ४८८
पंचम प्रायश्चित्तद्वार... ---------- ४८९
छठा तपोद्वार... ---------- ४९१
अनशन तप के भेद-प्रभेद ---------- ४९१
अवमौदर्य तप के भेद-प्रभेदों की प्ररूपणा ---------- ४९३
भिक्षाचर्या, रसपरित्याग एवं कायक्लेश तप की प्ररूपणा ---------- ४९५
प्रतिसंलीनता तप के भेद एवं स्वरूप का निरूपण ---------- ४९६
षड्विध आभ्यन्तर तप के नाम निर्देश ---------- ४९९
प्रायश्चित्त तप के दस भेद ---------- ४९९
विनय तप के भेद-प्रबेदों का निरूपण ---------- ५००
वैयावृत्य और स्वाध्याय तप का निरूपण ---------- ५०५
ध्यान-प्रकार और भेद-प्रबेद ---------- ५०६
व्युत्सर्ग के भेद-प्रभेदों का निरूपण ---------- ५१३
अष्टम उद्देशक
चौवीस दण्डकवर्ती जीवों की उत्पत्ति का विविध पहलुओं से निरूपण ---------- ५१६
नौवाँ उद्देशक
चौवीस दण्डगत भव्यजीवों की उत्पत्ति का अतिदेशपूर्वक निरूपण ---------- ५१९
दसवाँ उद्देशक
चौवीस दण्डकगत अभव्य जीवों की उत्पत्ति का अतिदेशपूर्वक निरूपण ---------- ५२०
ग्यारहवाँ उद्देशक
चौबीस दण्डकगत सम्यग्दृष्टि जीवों की उत्पत्ति का अतिदेशपूर्वक निरूपण ---------- ५२१
बारहवाँ उद्देशक
चौबीस दण्डकगत मिथ्यादृष्टि जीवों की उत्पत्ति का अतिदेशपूर्वक निरूपण ---------- ५२२
छव्वीसवाँ शतक
प्राथमिक ---------- ५२६
छव्वीसवें शतक का मंगलाचरण ---------- ५२६
छव्वीसवें शतक के ग्यारह उद्देशकों में ग्यारह द्वारों का निरूपण ---------- ५२६
प्रथम उद्देशक
प्रथम स्थान... ---------- ५२७
द्वितीय स्थान... ---------- ५२८
तृतीय स्थान... ---------- ५२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ स्थान...--- ५३०
छठा स्थान...--- ५३१
सप्तम स्थान...--- ५३१
अष्टम स्थान...--- ५३१
नवम स्थान...--- ५३२
दसवाँ स्थान... --- ५३३
ग्यारहवाँ स्थान... ---५३३
चौबीस दण्डकों में ग्यारह स्थानों की अपेक्षा पापकर्मबन्ध की चातुर्भंगिक...------------------५३३
जीव और चौवीस दण्डकों में ज्ञानावरणीय से लेकर मोहनीय... ---------------------------------५३५
जीव और चौवीस दण्डकों में आयुष्यकर्म की अपेक्षा... --५३८
जीव और चौवीस दण्डकों में नाम, गोत्र और अंतराय कर्म की अपेक्षा... ----------------------५४४
द्वितीय उद्देशक
अनन्तरोपपन्नक नारकादि चौवीस दण्डकों में पापकर्मबन्ध की अपेक्षा... ---------------------५४६
तृतीय उद्देशक
परम्परोपपन्नक चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध को लेकर ग्यारह... -----------------------५५०
चतुर्थ उद्देशक
अनन्तरावगाढ चौवीस दण्डकों में पापकर्मदि-बन्ध प्ररूपणा --------------------------------------५५१
पाँचवाँ उद्देशक
परम्परावगाढ चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध-प्ररूपणा --५५२
छठा उद्देशक
अनन्तराहारक चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध की प्ररूपणा ----------------------------------५५३
सातवाँ उद्देशक
परम्पराहारक चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध की प्ररूपणा-----------------------------------५५४
आठवाँ उद्देशक
अनन्तरपर्याप्तक चौवीस ण्डकों में पापकर्मादिबन्ध की प्ररपूणा-----------------------------------५५५
नौवाँ उद्देशक
परम्परपर्याप्तक चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध-प्ररूपणा---------------------------------------५५६
दसवाँ उद्देशक
चरम चौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध-प्ररूपणा---५५७
ग्यारहवाँ उद्देशक
अचरमचौवीस दण्डकों में पापकर्मादिबन्ध-प्ररूपणा ---५५८
अचरम चौवीस दण्डकों में ज्ञानवरणीयादि कर्मबन्ध-प्ररूपणा -------------------------------------५५९
सत्ताईसवाँ शतक
प्रथम से लेकर ग्यारह उद्देशक तक छव्वीसवें शतक की वक्तव्यतानुसार... -------------------------५६३
अट्ठाईसवाँ शतक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम उद्देशक
छव्वीसवें शतक में निर्दिष्ट ग्यारह स्थानों से जीवादि के पापकर्म...-----------------------------५६५
द्वितीय उद्देशक
अनन्तरोपपन्नक चौवीस दण्डकों में छव्वीसवें शतकानुसार...-----------------------------------५६८
तीसरे से ग्यारह उद्देशक
छव्वीसवें शतक के तृतीय से ग्यारहवें उद्देशकानुसार पापकर्मसमर्जन-प्ररूपणा-----------------५७०
उनतीसवाँ शतक
प्रथम उद्देशक
जीव और चौवीस दण्डकों में समकाल-विषमकाल की अपेक्षा पापकर्मवेदन... -----------------५७१
द्वितीय उद्देशक
अनन्तरोपपन्नक चौवीस दण्डकों में ग्यारह स्थानों की अपेक्षा समकाल...--------------------५७४
तीसरे से ग्यारह उद्देशक
छव्वीसवें शतक के तीसरे से ग्यारहवें उद्देशकानुसार सम-विषम-कर्म...-------------------------५७६
तीसवाँ शतक
प्राथमिक ---५७७
प्रथम उद्देशक
समवसरण और उसके चार भेद --५७९
जीवों की ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादिता आदि प्ररूपणा---------------------------------------५८२
चौवीस दण्डकों में ग्यारह स्थानों द्वारा क्रियावादी समवसरण-प्ररूपणा--------------------------५८४
क्रियावादादि चतुर्विध समवसरणगत जीवों की ग्यारह स्थानों में...------------------------------५८६
चौवीस दण्डकवर्ती क्रियावादि आदि जीवों की ग्यारह स्थानों में... ------------------------------५९१
क्रियावादी आदि चारों में जीव और चौवीस दण्डकों की ग्यारह स्थानों...-----------------------५९६
द्वितीय उद्देशक
अनन्तरोपपन्नक चौवीस दण्डकवर्ती जीवों के ग्यारह स्थानों...----------------------------------६००
क्रियावादी आदि चारों में अनन्तरोपपन्नक चौवीस दण्डकों की ग्यारह... -----------------------६०१
तृतीय उद्देशक
परम्परोपपन्नक चौवीस दण्डकीय जीवों में ग्यारह स्थानों द्वारा...-------------------------------६०३
चतुर्थ से ग्यारहवाँ उद्देशक
छव्वीसवें शतक के क्म से ४-११ वें उद्देशक तक की प्ररूपणा ----------------------------------६०४
इकतीसवाँ-बत्तीसवाँ शतक
प्राथमिक ---
इकतीसवाँ शतक
प्रथम उद्देशक
क्षुद्रयुग्म-नाम और प्रकार --६०६
चतुर्विध क्षुद्रयुग्म नैरयिकों के उपपात के सम्बन्ध में विभिन्न प्ररूपणा ----------------------६०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्म-कृष्णलेश्यो नैरयिकों के उत्पात को लेकर विविध... -------------------------६१०
तृतीय उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्मविशिष्ट नीललेश्यी नैरयिकों सम्बन्धी प्ररूपणा---------------------------------६१२
चतुर्थ उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्मकापोतलेश्यी नैरयिकों को लेकरविविध प्ररूपणा --------------------------------६१४
पंचम उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्म-भवसिद्धिक नैरयिकों की उपपात सम्बन्धी... ----------------------------------६१६
षष्ठ उद्देशक
कृष्णलेश्यी भवसिद्धिक नारकों की उपपात सम्बन्धी प्ररूपणा------------------------------------६१७
सप्तम उद्देशक
नीललेश्या वाले भवसिद्धिक नारकों की प्ररूपणा ---६१८
अष्टम उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्म कापोतलेश्यी भवसिद्धिक नैरयिकों की उपपात-प्ररूपणा----------------------६१९
नवम से बारह उद्देशक
अभव्य नैरयिकों सम्बन्धी वक्तव्यता--६२०
तेरह से सोलह उद्देशक
लेश्यायुक्त सम्यग्दृष्टि नारकों की वक्तव्यता --६२१
सत्तरह से बीस उद्देशक
मिथ्यादृष्टि नारक सम्बन्धी चार उद्देशक--६२२
इक्कीस से चौबीस उद्देशक
कृष्णपाक्षिक नारक सम्बन्धी --६२३
पच्चीस से अट्ठाईस उद्देशक
शुक्लपाक्षिक नैरयिकों सम्बन्धी कथन ---६२४
बत्तीसवाँ शतक
प्रथम उद्देशक
नारकों की उद्वर्त्तना --६२५
दूसरे से अट्ठाईस उद्देशक
चतुर्विध क्षुद्रयुग्म कृष्णलेश्यी नैरयिकों की उद्वर्तना सम्बन्धी प्ररूपणा -------------------------६२७
तेतीसवाँ प्रथम एकेन्द्रिय शतक
प्राथमिक --६२८
प्रथम उद्देशक
एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेद---६२९
एकेन्द्रिय जवों की कर्मप्रकृतियाँ, उनका बन्ध और वेदन --६३०
द्वितीय उद्देशक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनन्तरोपपन्नक एकेन्द्रिय के भेद-प्रबेद... ---------- ६३३
तृतीय उद्देशक
परम्परोपपन्नक एकेन्द्रिय जीवों के भेद-प्रभेद... ---------- ६३५
चतुर्थ से ग्यारहवाँ उद्देशक
एकेन्द्रिय सम्बन्धी विविध अतिदेश ---------- ६३६
द्वितीय से बारहवाँ एकेन्द्रियशतक
विविध दृष्टों से एकेन्द्रिय जीवों के सम्बन्ध में प्ररूपणा ---------- ६३८
चौतीसवाँ शतक-बारह एकेन्द्रिय शतक
प्राथमिक ----------
बारह एकेन्द्रिय श्रेणीशतक ---------- ६५५
पैतीस से चालीसवाँ शतक
प्राथमिक ---------- ६८६
पैतीसवाँ शतक
एकेन्द्रिय महायुग्मशतक अर्थात् एकेन्द्रिय जीवों-सम्बन्धी प्ररूपणा ---------- ६८७
छत्तीसवाँ शतक
बारह द्वीन्दर्य महायुग्मशतक-द्वीन्द्रिय जीवों-सम्बन्धी विविध द्वारों से प्ररूपणा ---------- ७११
सैतीसवाँ शतक
द्वीन्द्रिय महायुग्मशतक के अतिदेशपूर्वक बारह त्रीन्द्रिय महायुग्मशतक ---------- ७२०
अड़तीसवाँ शतक
द्वादश चतुरिन्द्रिय महायुग्मशतक-चतुरिन्द्रिय जीवों सम्बन्धी प्ररूपणा ---------- ७२१
उनचालीसवाँ शतक
असंज्ञी पंचेन्द्रियमहायुग्मशत-असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों सम्बन्धी प्ररूपणा ---------- ७२२
चालीसवाँ शतक
इक्कीस संज्ञी पंचेन्द्रिय महायुग्मशतक-संज्ञी पंचेन्द्रिय-सम्बन्धी उत्पादादि... ---------- ७२३
इकतासलीसवाँ शतक
प्राथमिक ---------- ७४१
प्रथम उद्देशक
राशियुग्म-भेद और स्वरूप ---------- ७४२
राशियुग्म-कृतयुग्मराशि वाले चौवीस दण्डकों में उपपातादि वक्तव्यता ---------- ७४२
द्वितीय उद्देशक
राशियुग्म-वत्र्योजराशि वाले चौवीस दण्डकों में उपपातादि वक्तव्यता ---------- ७४८
तृतीय उद्देशक
राशियुग्म-द्वापरयुग्मराशि वाले चौबीस दण्डकों में उपपातादि प्ररूपणा ---------- ७५०
चतुर्थ उद्देशक
राशियुग्म-कल्योजराशिरूप चौवीस दण्डकों में उपपातादि प्ररूपणा ---------- ७५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पांच से आठ उद्देशक
कृष्णलेश्या वाले राशइयुग्म में कृतयुग्मादिरूप चौवीस दण्डकों... -------------------------------- ७५२
नौ से अट्ठाईस उद्देशक
नीलादि लेश्याओं के आधार से नरकादि के उपपातादि का निरूपण -------------------------- ७५४
उनतीस से छप्पन उद्देशक
पूर्व के अट्ठाईस उद्देशकों के अतिदेशपूर्वक भवसिद्धिक... -- ७५६
सत्तावन से चौरासी उद्देशक
पूर्व के अट्ठीस उद्देशकों के अनुसार अभवसिद्धिक सम्बन्धी... ------------------------------------ ७५८
पचासी से एकसौ बारह उद्देशक
सम्यग्दृष्टि सम्बन्धी ट्ठाईस उद्देशक-- ७६०
एकसौ तेरह से एकसौ चालीस उद्देशक
मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा अट्ठाईस उद्देशकों का निर्देश -- ७६१
एकसौ इकतालीस से एकसौ अड़सठ उद्देशक
कृष्णपाक्षिक की अपेक्षा पूर्ववत् अट्ठाईस उद्देशक--- ७६२
एकसौ उनहत्तर से एकसौ छियानवै उद्देशक
शुक्लपाक्षिक के आश्रित पूर्ववत् अट्ठाईस उद्देशक -- ७६३
उपसंहार
व्याख्याप्रज्ञप्ति के शतक, उद्देशक और पदों का परिमाण-- ७६५
अन्तिम मंगलःश्रीसंघ-जयवाद -- ७६५
पुस्तक-लिपिकार द्वारा किया गया नमस्कार --- ७६५
भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति की उद्देशविधि --- ७६५
व्यक्तिनामानुक्रमणिका -- ७६९
विशिष्टस्थान-नामानुक्रमणिका--- ७७३
भगवतीनिर्दिष्ट शास्त्र-नामानुक्रमणिका--- ७७७
कतिपय विशिष्ट शब्दसूची --- ७७९
अनध्यायकाल --- ७८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org